Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِیۡ فَرَضَ
عَلَیۡکَ الۡقُرۡاٰنَ لَرَآدُّکَ
اِلٰی مَعَادٍ

(सूरः क़सस, आयत : 86)

अनुवाद : निस्संदेह जिसने तुम पर क़ुरआन को अनिवार्य किया है, वह तुम्हें अवश्य लौटाकर उस स्थान की ओर ले आएगा, जहाँ तुम वापस जाओगे।

वर्ष- 10
अंक - 23
मूल्य 600 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

8 ज़ुल् हज्जा, 1446-47 हिज्री कमरी, 05 अहसान 1404 हिज्री शम्सी, 05 जून 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

बड़े-बड़े अनुसंधानकर्ता अंग्रेजों को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि इस्लाम की सच्चाई की जो आत्मा है, वह इतनी प्रभावशाली और शक्तिशाली है कि वह अन्य जातियों को इस्लाम की ओर आने पर विवश कर देती है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

नैतिक करामत

अल्लाह तआला से सुधार की याचना करना और अपनी शक्ति को उसी राह में लगाना यही सच्चे ईमान की राह है। हदीस शरीफ में आया है कि जो व्यक्ति सच्चे यक़ीन के साथ अपने हाथ दुआ के लिए उठाता है, अल्लाह तआला उसकी दुआ को रद्द नहीं करता। अतः ख़ुदा तआला से मांगो और पूरे विश्वास व सच्ची नीयत से मांगो। मेरी फिर यही नसीहत है कि श्रेष्ठ आचरण का प्रदर्शन करना ही वास्तविक करामत को प्रकट करना है। यदि कोई कहे कि मैं करामती व्यक्ति नहीं बनना चाहता, तो यह स्मरण रखे कि शैतान उसे धोखे में डाल रहा है। करामत से घमंड या आत्म-मोह का भाव नहीं अभिप्रेत है। करामत का अर्थ यह है कि लोगों पर इस्लाम की सच्चाई और उसकी वास्तविकता प्रकट हो और वे मार्गदर्शन प्राप्त करें। मैं पुनः कहता हूँ कि घमंड और आत्म-मोह तो नैतिक करामत का हिस्सा ही नहीं हैं। अतः यह तो शैतानी भ्रम है।

देखो, यह जो करोड़ों मुसलमान पृथ्वी के विभिन्न भागों में दिखाई देते हैं, क्या ये लोग तलवार के बल पर, ज़बरदस्ती या जबरन मुसलमान हुए हैं? नहीं! यह बात सर्वथा असत्य है। यह इस्लाम के करामती प्रभाव का ही परिणाम है जिसने उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। करामतें अनेक प्रकार की होती हैं, उनमें से एक प्रकार नैतिक करामत भी है, जो हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करती है। जिन्होंने इस्लाम स्वीकार किया, उन्होंने केवल सच्चे और निष्कलंक लोगों की नैतिक करामत को देखा और उसी का प्रभाव पड़ा। उन्होंने इस्लाम को गरिमा और महानता की दृष्टि से देखा, तलवार की दृष्टि से नहीं। बड़े-बड़े अनुसंधानकर्ता अंग्रेजों को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि इस्लाम की सच्चाई की आत्मा ही इतनी प्रबल है कि वह अन्य जातियों को इस्लाम की ओर आने पर विवश कर देती है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 125, मुद्रित 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

धर्म को सदैव प्राथमिकता दें और सदा यह स्मरण रखें कि प्रत्येक अहमदी के साथ अहमदियत, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रतिष्ठा तथा संपूर्ण इस्लाम की मर्यादा जुड़ी हुई है।

जलसे के इन दिनों में अपने अंत:करण से पूरी तरह सांसारिक आकर्षण को दूर कर दें और सम्पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला की प्रेमभावना तथा उसके अंतिम सन्देशवाहक की प्रेमभावना को प्रधानता दें, और भरसक प्रयास करें कि आप ख़ुदा तआला के सान्निध्य को प्राप्त करने वाले बनें।

पुर्तगाल में आयोजित 18वाँ वार्षिक अधिवेशन दिनांक 4 एवं 5 अक्टूबर 2019 के अवसर पर

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का विशेष **संदेश**

प्रिय सदस्यगण, अहमदिया मुस्लिम जमाअत, पुर्तगाल,
अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू

मुझे अत्यंत हर्ष है कि आप अपना अठारहवाँ वार्षिक अधिवेशन 4 और 5 अक्टूबर 2019 को आयोजित कर रहे हैं। मेरी प्रार्थना है कि ख़ुदा तआला इस अधिवेशन को सर्वोच्च सफलता प्रदान करे। ख़ुदा तआला करे कि इसमें भाग लेने वाले सभी व्यक्ति श्रेष्ठ आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें और भलाई, सच्चरित्रता तथा धार्मिकता में उत्तरोत्तर उन्नति करें।

आपको यह बात सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्य निष्ठा को स्वीकार करने के उपरांत जो अनेक प्रकार की ख़ुदा तआला कृपाएँ प्राप्त होती हैं, उनमें एक यह वार्षिक अधिवेशन भी है। यह एक विशेष संगम है, जो हमें अपने हृदय को शुद्ध करने, पवित्र जीवन की ओर अग्रसर होने, और आत्मिक उन्नति प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। यह अधिवेशन हमारे आध्यात्मिक तथा नैतिक स्तर को सुधारने के साथ-साथ इस्लाम के संबंध में हमारे ज्ञान को भी व्यापक बनाता है। इस प्रकार हम और अधिक प्रभावशाली ढंग से ख़ुदा तआला एवं उसकी समस्त सृष्टि के अधिकारों को निभा सकते हैं।

इन दिनों में अपने अंतर में व्याप्त संसारिक लालसाओं को पूर्णतः समाप्त कर दें और सम्पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला के प्रति प्रेमभावना तथा उसके अंतिम सन्देशवाहक के प्रति श्रद्धा को सर्वोपरि रखें। प्रयास करें कि आप उन लोगों में सम्मिलित हों जो ख़ुदा तआला के निकट पहुँचने वाले होते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन लोगों के प्रति अप्रसन्नता प्रकट की है जो केवल सांसारिक उद्देश्य से अधिवेशन में भाग नहीं लेते, और अपनी आत्मिक उन्नति का प्रयास नहीं करते।
आपने एक स्थान पर फ़रमाया है

"मैं यह नहीं चाहता कि इस युग के पीठासीन धार्मिक नेताओं की भाँति केवल ऐसे लोगों की भीड़ एकत्र कर लूँ जो मेरी शरण में आकर केवल बाह्य दिखावे और सांसारिक गौरव का प्रदर्शन करें। बल्कि मेरा भेजे जाने

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को ग़ज़वा-ए-मोअता के हालात और वाक़िआत से आगाह फ़रमाया और जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन आया, तो आपने अपनी मुबारक उंगली उठाकर फ़रमाया:
"ऐ अल्लाह! यह तेरी तलवारों में से एक तलवार है, तू इसकी मदद फ़रमा।"

उसी दिन से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को "सैफ़ुल्लाह" यानी अल्लाह की तलवार कहा जाने लगा।

हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु पहले वह मुसलमान थे जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घोड़े की पिंडलियाँ काट दीं।
"क़ौमें अपने झंडों का बहुत अदब और एहतराम करती हैं। कभी-कभी दुश्मन से उसका झंडा छीनने के लिए बड़ी कुर्बानियाँ दी जाती हैं, और कभी अपना झंडा बचाने के लिए जानें तक निछावर कर दी जाती हैं और यह शिर्क नहीं होता।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

इस दौर में, अहमदियों को चाहिए कि अपनी इबादतों पर ख़ास तवज्जो दें।

दुनिया के आम हालात के लिए दुआओं का सिलसिला जारी रखें

ख़ास तौर पर आजकल पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जो नाज़ुक सूरतेहाल है, उसके लिए बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला ज़ुल्म का खात्मा फ़रमाए, मज़लूमों की हिफ़ाज़त फ़रमाए, हुकूमतों को अक़्ल और हिदायत दे कि वो जंग की तरफ़ बढ़ने के बजाय सुलह और सुलह सफाई से मुआमलात हल करें, और बैनुल-अक़वामी मुआहिदों की पासदारी करें।

ग़ज़वा-ए-मोअता के तआल्लुक से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-मुबारका का ज़िक्र,
और हालिया भारत-पाकिस्तान झगड़े के हवाले से दुआओं की ख़ास ताकीद।

श्रीमान मुहम्मद आसिफ साहिब शहीद, फ़रज़ंद रफ़ीक़ अहमद साहिब, साकिन भलैर, ज़िला क़सूर का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

पाकिस्तान में जो लोग दहशतगर्दी फैला रहे हैं और जमाअत की मुख़ालेफ़त में हद से बढ़ते जा रहे हैं, उनकी जुरअत में रोज़-ब-रोज़ इज़ाफ़ा हो रहा है।

अल्लाह तआला जल्द उनके लिए अपने अज़ाब और गिरफ़्त के रास्ते खोले, और दीन-ए-हक़ की नुसरत फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ग़ज़वा-ए-मोअतह का वर्णन हो रहा था। इसके बारे में अधिक विवरण इस प्रकार है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु को विदा फ़रमाया, तो हज़रत अब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे कोई ऐसी बात की वसीयत फ़रमाइए जिसे मैं आपकी ओर से याद रख सकूं। आपने फ़रमाया: कल तुम एक ऐसे नगर में पहुंचोगे जहां सज्दा बहुत कम होता है, अतः वहां तुम सज्दों की अधिकता करना। यह बहुत ही बड़ी नसीहत है। आज के इस युग में भी जिन देशों में हम रह रहे हैं, वहाँ का हाल कुछ ऐसा ही है। लोग अल्लाह तआला को भुला चुके हैं। ऐसे समय में, इस दौर में, अहमदियों को चाहिए कि वे अपनी इबादतों की तरफ़ विशेष ध्यान दें।

फिर उन्होंने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल! और कुछ वसीयत फ़रमाएं। आपने फ़रमाया: अल्लाह तआला का ज़िक्र करते रहो। यह हर उस मामले में जिसमें तुम चाहो, तुम्हारा मददगार होगा। ज़िक्र-ए-इलाही अत्यंत आवश्यक चीज़ है। जब हज़रत अब्दुल्लाह रवाना होने लगे तो फिर लौटे और अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह अकेला है और अकेले को पसंद करता है। इस पर आपने फ़रमाया: सवाल करते ही जाओगे, ऐ इब्ने रवाह? अब बस करो। जब तू आजिज़ आ जाए, और अगर तूने दस व्यक्तियों से बुराई की हो, तब भी एक से नेकी करने में आजिज़ मत आना। अर्थात इतनी बुराइयों के बाद भी अगर तू अल्लाह तआला की खातिर एक भलाई करेगा, और दिल में अल्लाह का डर होगा, तो अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाने वाला है। अतः अल्लाह तआला नेकी करने वालों को बख्श देता है, उसकी रहमत अत्यंत व्यापक है। पूरी कोशिश इसी में रखो कि नेकी करनी है और बुराई से बचना है। यह नहीं कि हर बार दस बुराइयां करो और फिर कहो कि एक नेकी कर ली। नहीं! बल्कि सच्चा तौबा करने वाला बुराई करने के बाद फिर उनसे दूर भागता है और नेकी करने की कोशिश करता है ताकि वह अल्लाह के फ़ज़्ल का पात्र बने।

खैर, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि "तू एक से नेकी करने में आजिज़ न हो," तो इस पर हज़रत अब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! अब इसके बाद मैं आपसे और कोई सवाल नहीं करूंगा।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, भाग 6, पृष्ठ 146-147, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बेरूत)

लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम द्वारा नियुक्त किए गए अमीरों को विदा किया। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह को विदा किया गया, तो वह रोने लगे। सहाबा ने पूछा: आपको किस चीज़ ने रुला दिया? उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! न मुझे दुनिया से मोहब्बत है और न ही तुमसे, लेकिन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक आयत पढ़ते हुए सुना है जिसमें जहन्नम का ज़िक्र है:

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا (مریم: 72)

"और तुम में से कोई नहीं होगा जो उससे होकर न गुज़रे; यह तुम्हारे रब की ओर से एक निश्चित, पूरा किया हुआ वादा है।"

(मरियम: 72)

उन्होंने कहा: जब यह हालात पेश आने ही हैं, तो मुझे नहीं मालूम कि उसमें प्रवेश करने के बाद मेरी वापसी कैसी होगी। इस पर मुसलमानों ने कहा: अल्लाह

तुम्हारे साथ हो और वह इसे (यानी बुराई को) तुमसे दूर कर दे, और तुम हमारी ओर भलाई की हालत में लौटो।

(सबलुल हुदा व रशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 145, दारुल कुतुब अल् इल्मिया, बेरूत)

विदाई कहने वालों ने सबको दुआ दी। उनके दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ था, वरना एक सच्चे मोमिन के लिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वह जहन्नम में नहीं जाएगा। यहां मुराद यह है कि मोमिन, इस दुनिया में काफ़िरों द्वारा दी गई तकलीफ़ों के कारण दोज़ख का एक हिस्सा पा लेते हैं, और मरने के बाद की दोज़ख उनसे बहुत दूर होती है। सहाबा ने इस बात को समझते हुए कहा कि यह दुनिया की तकलीफ़ें भी अल्लाह तुमसे दूर करे, और तुम हमारे पास नेक हाली की हालत में लौटो। अल्लाह तआला का फ़ज़्ल तुम्हारे साथ हो।

लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने जुमे की नमाज़ के बाद मदीना से रवाना हुए। हज़रत इब्न अब्बास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मुहिम में अपने सहाबा को मोअता की ओर भेजा, जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह भी शामिल थे। उस दिन जुमे का दिन था। बाकी सहाबा तो पहले ही रवाना हो गए थे, लेकिन अब्दुल्लाह बिन रवाह ने कहा कि मैं पीछे रुककर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जुमे की नमाज़ अदा कर लूं, फिर उन्हें जाकर मिल जाऊंगा।

जब वे नमाज़ में आपके साथ शरीक थे, तो आपने उन्हें देख कर फ़रमाया: तुझे किस चीज़ ने अपने साथियों के साथ रवाना होने से रोका? उन्होंने अर्ज़ किया: मेरी इच्छा थी कि मैं आपके साथ नमाज़-ए-जुमा अदा करूं, फिर जाकर अपने साथियों से मिलूं। आपने फ़रमाया: ज़मीन में जो कुछ भी है, यदि तुम वह सब खर्च कर दो, तो भी उन लोगों के फ़ज़्ल को नहीं पहुंच सकते जो इस मुहिम में पहले ही रवाना हो चुके हैं।

(सुन्नन-ए-तिर्मिज़ी, अबवाबुल जुमा, बाब मा जा फ़िस्सफ़र यौमल जुमा, हदीस 527)

अर्थात जब मैंने मुहिम रवाना की, तो तुम्हारा फ़र्ज़ था कि यह न कहते कि पहले जुमा अदा कर लूं, बल्कि फ़ौरन रवाना हो जाते।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का पहली बार मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध करने का ज़िक्र मिलता है। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद एक मशहूर सवार (घुड़सवार) थे। वे भी इस लश्कर के एक आम सिपाही के तौर पर शरीक हुए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब इस लश्कर को तैयार किया, तब हज़रत ख़ालिद को इस्लाम में दाख़िल हुए अभी तीन ही महीने हुए थे।

(ग़ज़वा-ए-मोअतह, अल्लामा मुहम्मद बाशमील, पृष्ठ 273, नफ़ीस अकैडमी, कराची)

जब मुसलमान मदीना से कुछ दूर पहुँचे तो दुश्मन को उनकी ख़बर हो गई और वे मुक़ाबले के लिए तैयारी करने लगे। मालूम होता है कि मुनाफ़िक़ीन मदीना और यहूदियों ने मुसलमानों के इकट्ठा होने और उनके शाम की तरफ़ मार्च करने की ख़बर उड़ा दी थी ताकि यह जो मुक़ाबले पर ईसाई थे, वे अपना बचाव का सामान कर लें।

शरहबील बिन अम्रू जज़ीरा अरब से मिले हुए शाम के दक्षिणी इलाक़ों पर रोमियों का गवर्नर था। उसे मदीना के रोमी जासूसों से इस लश्कर के मार्च करने की ख़बर मिली। उसने रोमियों को सूचना देने के लिए आदमी भेजा कि मुसलमान शाम की तरफ़ मार्च कर रहे हैं। फिर वह रोमियों के दोस्त क़बीलों से शाम के दक्षिण में फ़ौज इकट्ठी करने लगा। फिर ख़ुद उसने उसी समय अपने भाई को अपने कुछ आदमियों के साथ हरावल दस्ते के तौर पर भेजा कि वह उसके लिए इस्लामी फ़ौज की ख़बरें मालूम करें।

(ग़ज़वा-ए-मोअतह, अल्लामा बाशमील, पृष्ठ 277-278, नफ़ीस एकेडमी कराची)

यह भी लिखा है कि दूसरी तरफ़ शरहबील बिन अम्रू ने एक लाख से ज़्यादा लोगों का लश्कर तैयार किया। जब मुसलमान वादी-उल-कुरा में पहुँचे तो शरहबील ने अपने भाई सुदूस को पचास मुशरिकीन के साथ भेजा। उन्होंने मुसलमानों से जंग की। सुदूस के साथियों को शिकस्त हुई और वह ख़ुद भी क़त्ल हो गया। मुसलमान भी आगे बढ़े और शाम के इलाक़े मआन में पहुँचे। यह जगह मूतह से पहले वाक़ि है। यहाँ सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को दुश्मन की क़तार और उनके जमा होने का इल्म हुआ और उनको ख़बर मिली कि हरकल एक लाख रोमियों के साथ बल्क़ा के इलाक़े मआब में आया हुआ है और उसके साथ अलग-अलग क़बीलों से एक लाख अरब भी मिल गए हैं।

अल्लामा ज़रक़ानी कहते हैं कि मुमकिन है कि यह एक लाख का लश्कर वही हो जिसे शरहबील ने इकट्ठा किया था। मुसलमानों ने दो रातें मआन में क़याम किया और वे इस मामले पर ग़ौर-ओ-फ़िक्र करते रहे। कुछ ने कहा कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ख़त लिखकर सारी ख़बर दे देते हैं। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मज़ीद लश्कर भेजकर हमारी मदद करें या कोई और हुक्म फ़रमाएँगे जिसे हम कर गुज़रेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए हिम्मत दी और कहा: "ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की क़सम जिस चीज़ को तुम अब नापसंद कर रहे हो, उसी के हासिल के लिए तुम निकले थे। तुम शहादत की आरज़ू लेकर निकले हो। हम लोगों से तादाद या कुव्वत से जिहाद नहीं करते।" उन्होंनेकहा कि हमारा जो जिहाद होता है वह तादाद की वजह से नहीं होता या ताक़त की वजह से नहीं होता बल्कि इस दीन-ए-हक़ के साथ उनसे जिहाद करते हैं जिसके साथ रब्ब-ए-तआला ने हम को इज़्ज़त बख़्शी है। आगे बढ़ो, तुम्हें दो भलाइयों में से एक नसीब होगी ग़लबा या शहादत। यह दोनों मक़ाम बुरे नहीं हैं।" सहाबा-ए-किराम ने कहा: "बिल्लाह! इब्ने रवाहा ने सच कहा।" सहाबा-ए-किराम आगे रवाना हो गए।

जब तुख़ूम-उल-बल्क़ा पहुँचे तो उन्हें हरकुल का लश्कर मिला जो अहले रोम और अहले अरब पर मुश्तमिल था। यह बस्ती बल्क़ा की बस्तियों में से एक थी जिसे मशारिफ़ कहा जाता था। दुश्मन क़रीब हुआ तो मुसलमान उस बस्ती की तरफ़ हट गए जिसे मूतह कहा जाता था। वहाँ ही यह मअरका-ए-हक़-ओ-बातिल ज़ाहिर हुआ। मुसलमानों ने मुशरिकीन के लिए तैयारी की। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस जंग में शरीक हुए थे। वह बयान करते हैं कि जब दुश्मन हमारे क़रीब हुआ तो हमने इतनी क़सीर तादाद और इतने उम्दा तैयारी अस्लहा, घोड़े, रेशम, दीबाज और सोना नहीं देखा था। यहाँ तक कि मेरी आँखें चौंधिया गईं। मुझे हज़रत साबित बिन अकरम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "अबू हुरैरा! तुम क़सीर लश्कर देख रहे हो?" सवाल किया। मैंने कहा: "हाँ।" उन्होंने कहा: "तुमने हमारे साथ ग़ज़वा-ए-बद्र में शिरकत नहीं की। हम कसरत की वजह से ग़ालिब नहीं आए थे।"

इब्ने इश्हाक़ ने लिखा है कि मुसलमानों ने मुशरिकीन के लिए तैयारी की और लश्कर के दाएँ और बाएँ हिस्से पर निगरान मुतअय्यन किए गए।

हज़रत ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत के बारे में लिखा है: फिर लोग आपस में नब्रद-आज़मा हो गए। उन्होंने सख़्त क़ताल किया। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के अलम के साथ जिहाद किया, यहाँ तक कि दुश्मन के नेज़ों की वजह से जाम-ए-शहादत नोश कर गए। फिर हज़रत जअफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अलम-ए-इस्लाम थामा और जिहाद किया। जब क़ताल उनकी रुकावट बना तो अपने घोड़े शक़रा से नीचे उतर आए। उसकी कुंचियाँ काट दीं, फिर जिहाद किया यहाँ तक कि वह शहीद हो गए।

हज़रत जअफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) पहले मुसलमान थे जिन्होंने राह-ए-ख़ुदा में अपने घोड़े की कुंचियाँ काटीं।

क़बीला बनू मुर्रा बिन औफ़ में से एक शख़्स ने ग़ज़वा-ए-मोअतह में शिरकत की थी। उन्होंने कहा: "गोया कि मैं अब भी हज़रत जअफ़र को देख रहा हूँ जब वह अपने शक़रा घोड़े से नीचे उतरे, उसकी कुंचियाँ काटीं, फिर जिहाद किया यहाँ तक कि वह शहीद हो गए।" उस समय वह यह अशआर पढ़ रहे थे।

يَا حَبَّذَا الْجَنَّةُ وَاقْتِرَابُهَا ‏ طَيِّبَةً وَبَارِدًا شَرَابُهَا

وَالرُّوْمُ رُوْمٌ قَدْ دَنَا عَذَابُهَا ‏ كَافِرَةٌ بَعِيْدَةٌ أَنْسَابُهَا

عَلَيَّ إِذْ لَاقَيْتُهَا ضِرَابُهَا

यानी जन्नत और उसके क़र्ब के क्या कहने। उसका पानी कितना पाकीज़ा और ठंडा है। रोमी रोमी हैं, उनका अज़ाब क़रीब आ गया है। वे काफ़िर हैं। उनका नसब बहुत ज़्यादा दूर है। मुझ पर लाज़िम है कि जब मैं उनसे जंग करूँ तो उन्हें ज़र्ब लगाऊँ।

एक रिवायत में है। हज़रत अबू आमिर बयान करते हैं कि हज़रत जाफ़र ने हथियार ज़ेब-ए-बदन किए फिर मुशरिकीन पर हमला कर दिया। जब उन्हें ख़तरा लगा कि वह दुश्मन में मिल जाएँगे तो उन्होंने हथियार फेंक दिए। उन्होंने दुश्मन पर हमला किया और नेज़ाबाज़ी की यहाँ तक कि शहीद हो गए।

इब्ने हिशाम ने रिवायत की है कि हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपने दाएँ हाथ में झंडा थामा। वह हाथ कट गया फिर बाएँ हाथ में झंडा थाम लिया। वह भी कट गया। फिर उसे अपनी कोहनियों के साथ सीने से चिपका लिया यहाँ तक कि शहीद हो गए। उस समय उनकी उम्र तैंतीस साल थी। उन बाज़ुओं के बदले अल्लाह तआला ने उन्हें दो पर अता कर दिए। वह उनके साथ जन्नत में जहाँ चाहते उड़ते। यह भी कहा जाता है कि एक रोमी ने उन पर एक ज़र्ब लगाई और उन्हें दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया।

इमाम बुख़ारी और इमाम बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है। वह बयान करते हैं कि मैं इस ग़ज़वे में शरीक था। हमने हज़रत जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को तलाश किया। हमने उन्हें शहदा में पाया। हमने देखा कि उनके जिस्म पर साठ से ज़्यादा नेज़ों और तीरों के ज़ख़्म थे। दूसरी रिवायत में है कि मैंने उनके जिस्म पर नेज़े और तलवार के पचास ज़ख़्म गिने। उनमें से कोई भी ज़ख़्म उनकी पीठ पर नहीं था। सब सामने थे।

जब हज़रत जाफ़र शहीद हो गए तो इस्लाम का झंडा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने थाम लिया था। लिखा है कि वह अपने घोड़े पर आगे बढ़े। पहले भी बयान हो चुका है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह हज़रत जाफ़र के बाद कमांडर बने। उनके नफ़्स में तरद्दुद आया, थोड़ा सा शक पैदा हुआ, ख़ौफ़ पैदा हुआ तो उन्होंने यह अशआर पढ़े। जिनका तर्जुमा यह है कि:

"ऐ नफ़्स! मैंने क़सम उठाई है कि तू ज़रूर मैदान-ए-जंग में उतरेगा। ख़ुशी से उतरेगा या तुझे मजबूर किया जाएगा। अगर लोग इकट्ठे हो जाएँ और कमानें कस लें तो क्या है कि मैं तुझे देखता हूँ कि तू जन्नत को पसंद नहीं कर रहा। तुझे बड़ा शक पड़ रहा है।"

फिर अशआर में ही उन्होंने कहा कि:

"तवील मुद्दत से तू इस पर मुतमइन था। तू एक पुराने मश्कीज़े से टपकने वाला एक क़तरा है।"

बहरहाल यह पढ़ने के बाद वह अपने घोड़े से नीचे उतरे तो हज़रत इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक हड्डी वाला गोश्त लेकर आए और उन्होंने कहा: "इससे अपनी कमर मज़बूत कर लें। ज़रा थोड़ी सी ताक़त पैदा हो जाए गोश्त खाने से। भुना हुआ था। उन दिनों में आपको मुश्किल हालात का सामना करना पड़ा है।"

उन्होंने वह हड्डी वाला गोश्त लिया, उससे कुछ हिस्सा तोड़ा फिर लोगों में एक जानिब टकराव की आवाज़ सुनी। आवाज़ सुनी कि जंग शुरू हो चुकी है और तलवारें चल रही हैं तो अपने नफ़्स से उन्होंने कहा कि: "तू अभी भी दुनिया में है। गोश्त खाने में लगा हुआ है। लोग तलवारों से लड़ रहे हैं।"

तो उन्होंने फ़ौरान वह हड्डी अपने हाथ से फेंक दी और अपनी तलवार थामी। आगे बढ़े और लड़ाई शुरू कर दी यहाँ तक कि शहीद हो गए और उनके हाथ से झंडा गिर पड़ा। मुसलमान और मुशरिकीन आपस में मिल गए। कुछ अफ़राद पसपा हो गए। इस पर हज़रत क़ुत्बा बिन आमिर पुकार-पुकार कर कहने लगे:

"ऐ क़ौम! पीठ फेर कर क़ताल करने की बजाय आगे बढ़ कर क़ताल करना ज़्यादा बेहतर है।"

उन्होंने जोश दिलाया। एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ज़ैद, जाफ़र और अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया।

हज़रत अबू आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह शहीद हो गए तो मुसलमानों को बुरी तरह हज़ीमत उठानी पड़ी। यह कहते हैं कि मैंने दो अफ़राद को भी इकट्ठा नहीं देखा। बिल्कुल बिखर गए थे। एक अंसारी शख़्स ने झंडा उठा लिया। वह दौड़कर आया, उसने लोगों के आगे आकर झंडा गाड़ दिया। फिर कहा: "ऐ लोगो! मेरी तरफ आओ।"

लोग उसके पास जमा हो गए। जब झंडा आ गया तो फिर मुसलमान लोग इकट्ठा होने लगे। जब उनकी तादाद ज़्यादा हो गई तो वह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास गए। हज़रत ख़ालिद ने उस अंसारी से कहा: "मैं इसे तुमसे नहीं लूँगा। तुम इसके ज़्यादा मुस्तहक़ हो।"

उस अंसारी ने कहा: "अल्लाह की क़सम! मैंने इसे तुम्हारे लिए पकड़ा है। मैंने तो पकड़ा ही आपके लिए है।"

बहरहाल हज़रत ख़ालिद की इमारत, मुशरेकीन को शिकस्त और अल्लाह तआला का रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को फ़तह का इल्म देना, इस बारे की तफ़सील भी बयान हुई है।

लिखा है कि हज़रत अबू युस्र अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा शहीद हो गए तो मैंने इस्लाम का झंडा हज़रत साबित बिन अकरम को दिया। हज़रत साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: "आप फ़नून-ए-जंग से मुझसे ज़्यादा आशना हैं।" चुनांचे वह झंडा हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को दे दिया गया।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने झंडा थामा तो उन्होंने लोगों का बचाव किया, उन्हें समेट कर इकट्ठा किया फिर अपने लश्कर को एक तरफ़ हटा लिया और दुश्मन भी उनसे पीछे हट गया और वह लोगों को बचाकर वापस ले आए। इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक यह दूर हटना ही दरअसल रोमियों से बचना था क्योंकि मुसलमान उस समय दो लाख से ज़्यादा रोमियों में मिल चुके थे यानी कि बिल्कुल आपस में गुथमगुथा थे जबकि मुसलमानों की कुल तादाद तीन हज़ार थी। इस एतबार से इस सरिया को फ़तह और नुसरत कहा गया है क्योंकि दुश्मन ने मुसलमानों को घेर लिया था। वह उन पर जमा हो चुके थे और आम तौर पर ऐसे हालात में सारे मुसलमान शहीद हो सकते थे। इमकान भी यही था लेकिन ऐसा कहना आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के उस फ़रमान के ख़िलाफ़ था कि "यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुम्हें फ़तह अता कर दे।" मतलब यही था कि तुम लोग बच तो जाओगे। फ़तह के भी कई मुख़्तलिफ़ पहलू होते हैं। अक्सर सीरत निगार लिखते हैं कि हज़रत ख़ालिद और उनके साथियों ने दुश्मन के साथ क़ताल किया यहाँ तक कि उन्हें शिकस्त से दोचार कर दिया।

हज़रत अबू आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान किया कि जब हज़रत ख़ालिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने झंडा थाम लिया तो दुश्मन पर हमला कर दिया। अल्लाह तआला ने दुश्मन को बुरी तरह शिकस्त दी। ऐसी शिकस्त मैंने कभी नहीं देखी थी। यहाँ तक कि मुसलमानों ने उन्हें इस तरह क़त्ल किया जैसे उन्होंने चाहा।

यह भी रिवायत है और हज़रत ख़ालिद की हिकमत-ए-अमली के बारे में, जंगी हिकमत-ए-अमली के बारे में एक रिवायत यह भी है, लिखा है कि हज़रत ख़ालिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मूतह में फ़ौज की दोबारा तंज़ीम की और शहसवारों का एक दस्ता मुंतख़ब किया और उन्हें हुक्म दिया कि वह रज़दारी से रातोंरात जनूब में जज़ीरा-ए-अरब की जानिब इस्लामी फ़ौज के पीछे ऐसी जगह पड़ाव डालें जहाँ रोमी न देख सकें। हज़रत ख़ालिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें हुक्म दिया कि मुतअद्दिद दस्तों में तक़सीम होकर इस्लामी लश्कर के पीछे से मूतह की तरफ़ आएँ और इंतिहाई बुलंद आवाज़ में तकबीरात बुलंद करें और अपने घोड़ों को मिट्टी वाली जगहों पर दौड़ाएँ ताकि बहुत गुबार उठे। इन बातों से हज़रत ख़ालिद का मक़सद यह था कि दुश्मन यह समझे कि मुसलमानों की मदद के लिए मज़ीद कुमक आ गई है।

हज़रत इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि हज़रत ख़ालिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने लश्कर को अज़ सर-ए-नो मुनज़्ज़म करते हुए लश्कर के अगले हिस्से को पीछे और पिछले हिस्से को आगे कर दिया और इस तरह दाएँ हिस्से को बाएँ और बाएँ हिस्से को दाएँ कर दिया। दुश्मन यह देख कर तअज्जुब में पड़ गया। उन्होंने समझा कि शायद मुसलमानों को मदद मिल गई है। मुख़्तलिफ़ लोग सामने आ गए हैं तो वह मरऊब हो गए और उन्हें शिकस्त हुई।

हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हज़रत ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत इब्ने रवाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) के शहीद होने का लोगों को बताया इससे पहले कि लोगों के पास उनकी कोई ख़बर आती। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने झंडा लिया और वह शहीद हो गए। फिर जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने लिया वह भी शहीद हो गए। फिर इब्ने रवाहा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने लिया वह भी शहीद हो

गए।" और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की आँखें आँसू बहा रही थीं। फ़रमाया: "यहाँ तक कि झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने लिया यहाँ तक कि अल्लाह ने उनको फ़तह दे दी।" यह बुख़ारी की रिवायत है।

हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि फिर आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपनी उंगली मुबारक बुलंद फ़रमाई और फ़रमाया:

"ऐ अल्लाह! यह तेरी तलवारों में से एक तलवार है। तू इसकी मदद फ़रमा।"

उस दिन से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) को सैफुल्लाह कहा जाने लगा, यानी अल्लाह की तलवार।

क रिवायत के मुताबिक़ यह जंग सात दिन तक जारी रही।

(सबूलुल हिदा वल् रिशाद, जिल्द 6, सफ़ा 147 से 151, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)

(फ़रहंग-ए-सीरत, सैय्यद फ़ज़लुर्रहमान साहब, सफ़ा 279)

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा-ए-मोअतह मिन अर्दिश शाम, हदीस नंबर 4260, 4262)

(फ़तहुल बारी, इब्ने हजर, जिल्द 9, सफ़ा 654, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल मूतह, ज़ीर हदीस 4262)

(माख़ूज़ अज़ ग़ज़वा-ए-मोअतह, बाशमील, सफ़ा 328, नफ़ीस एकेडमी कराची)

(शरह-ए-ज़रक़ानी, जिल्द 3, सफ़ा 343, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)

मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इसके बारे में बयान किया है। उन्होंने फ़रमाया, "यह पहला लश्कर था जो इस्लाम की ओर से ईसाइयत के मुकाबले के लिए निकला था। जब यह लश्कर शाम की सरहद पर पहुँचा, तो उसे मालूम हुआ कि कैसर भी इस तरफ आया हुआ है और उसके साथ एक लाख रोमी सिपाही हैं और एक लाख के करीब अरब के ईसाई क़बीलों के सिपाही भी उसके साथ हैं। इस पर मुसलमानों ने सोचा कि रास्ते में ही पड़ाव डाल दें और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला दें ताकि अगर आप कोई और मदद भेजना चाहें तो भेज दें और अगर कोई हुक्म देना चाहें तो वह भी दें।"

"जब यह मशवरा हो रहा था, तो अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु जोश में खड़े हो गए और बोले, 'ऐ कौम! तुम अपने घरों से अल्लाह के रास्ते में शहीद होने के लिए निकले थे और अब जिस मकसद के लिए निकले थे, उसी से घबरा रहे हो?' फिर उन्होंने कहा, 'हम लोगों से अपनी तादाद, अपनी ताक़त और अपनी कसरत की वजह से तो लड़ाइयाँ नहीं करते रहे। हम तो इस दीन की मदद के लिए दुश्मनों से लड़ते रहे हैं, जिसे अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से हमारे लिए नाज़िल किया है। अगर दुश्मन ज़्यादा है तो होने दो। आख़िर दो नेकीं में से एक नेकी हमें ज़रूर मिलेगी। या तो हम ग़ालिब आ जाएँगे या फिर अल्लाह की राह में शहीद हो जाएँगे।' लोगों ने जब उनकी यह बात सुनी तो कहा, 'इब्न रवाहा बिलकुल सच कहते हैं", और फ़ौरन कूच का हुक्म दे दिया गया।"

"जब वे आगे बढ़े तो रोमी लश्कर उन्हें अपनी तरफ़ बढ़ता हुआ नज़र आया, तो मुसलमानों ने मूतह के मक़ाम पर अपनी फ़ौज की सफ़बंदी कर ली और लड़ाई शुरू हो गई। थोड़ी ही देर में ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु, जो मुसलमानों के कमांडर थे, शहीद हो गए। तब इस्लामी फ़ौज का झंडा हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने, जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई थे, अपने हाथ में ले लिया और फ़ौज की कमान संभाल ली। जब उन्होंने देखा कि दुश्मन की फ़ौज का रेला बढ़ता चला जा रहा है और मुसलमान अपनी तादाद की कमी की वजह से उनके दबाव को बर्दाश्त नहीं कर सकते, तो वे जोश में घोड़े से कूद पड़े और अपने घोड़े की टांगें काट दीं। इसका मतलब यह था कि कम से कम मैं तो इस मैदान से भागने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं मौत को पसंद करूँगा लेकिन भागने को पसंद नहीं करूँगा। यह एक अरबी रिवाज था। वे घोड़े की टांगें इसलिए काट देते थे ताकि वह बिना सवार के इधर-उधर भागकर लश्कर में तबाही न मचा दे। सिर्फ उतरते नहीं थे, बल्कि उसकी टांगें भी काट देते थे।" "थोड़ी देर की लड़ाई में उनका दायाँ बाज़ू काट दिया गया, तो उन्होंने बाएँ हाथ से झंडा पकड़ लिया। फिर उनका बायाँ हाथ भी काट दिया गया, तो उन्होंने दोनों हाथों के ठूँठों से झंडे को अपने सीने से लगा लिया और मैदान में खड़े रहे, यहाँ तक कि वे शहीद हो गए। तब अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक झंडा पकड़ लिया और वे भी दुश्मन से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।" "उस वक्त मुसलमानों के पास यह मौका न था कि वे मशविरा करके किसी को अपना सरदार मुक़र्रर करते और यह भी करीब था कि दुश्मन के लश्कर की कसरत की वजह से मुसलमान मैदान छोड़ देते कि ख़ालिद बिन वलीद ने एक दोस्त की तहरीक पर झंडा पकड़ लिया और शाम तक दुश्मन का मुक़ाबला करते रहे। दूसरे दिन फिर ख़ालिद अपने थके हुए और ज़ख़्मी लश्कर को लेकर दुश्मन के मुकाबले के लिए निकले और उन्होंने यह होशियारी की कि लश्कर के अगले हिस्से को पीछे कर दिया और पिछले हिस्से को आगे, और दाएँ को बाएँ और बाएँ को दाएँ कर दिया और इस तरह नारे लगाए कि दुश्मन समझा कि मुसलमानों को और मदद पहुँच गई है। इस पर दुश्मन पीछे हट गया और ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी लश्कर को बचा कर वापस ले आए। दुश्मन खुद ही पीछे चला गया। मुसलमानों ने पीछा नहीं किया। बहरहाल, यह नहीं कि वे उनसे डर गए बल्कि दुश्मन खुद ही पीछे हट कर चला गया।"

"रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने इस वाक़ए की ख़बर उसी दिन वही के ज़रिए दे दी और आपने ऐलान करके सब मुसलमानों को मस्जिद में जमा किया। जब आप मिंबर पर चढ़े तो आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। आपने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! मैं तुम्हें इस जंग में जाने वाले लश्कर की खबर देता हूँ। वह लश्कर यहाँ से जाकर दुश्मन के मुकाबले खड़ा हुआ और लड़ाई शुरू होने पर सबसे पहले ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए। इसलिए तुम लोग ज़ैद के लिए दुआ करो।' आपने फ़रमाया, 'फिर झंडा जा'फ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिया और दुश्मन पर हमला किया यहाँ तक कि वे भी शहीद हो गए, इसलिए उनके लिए भी दुआ करो। फिर झंडा अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिया और खूब बहादुरी से लश्कर को लड़ाया, मगर आख़िर वे भी शहीद हो गए, इसलिए उनके लिए भी दुआ करो। फिर झंडा ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिया। मैंने उन्हें कमांडर मुक़र्रर नहीं किया था, मगर उन्होंने खुद ही अपने आप को कमांडर मुक़र्रर कर लिया। लेकिन वह अल्लाह तआला की तलवारों में से एक तलवार है।'"

इसका विवरण लिखा है कि दोस्त की प्रेरणा पर यह कैसे हुआ। लिखा है: "तो वह अल्लाह त'आला की मदद से इस्लामी लश्कर को सुरक्षित वापस ले आए। आपकी इस तक़रीर की वजह से खालिद रज़ि. का नाम मुसलमानों में सैफुल्लाह यानी खुदा की तलवार मशहूर हो गया। चूंकि खालिद आखिर में ईमान लाए थे, इसलिए कुछ सहाबा उन्हें मज़ाक में या किसी झगड़े के मौक़े पर इस बात का ताना दे दिया करते थे। एक बार ऐसी ही किसी बात पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि. से उनकी तकरार हो गई। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से खालिद की शिकायत की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: खालिद! तुम इस शख़्स को, जो कि बद्र के वक़्त से इस्लाम की खिदमत कर रहा है, क्यों दुःख देते हो? अगर तुम उहुद के बराबर भी सोना खर्च करो तो इसके बराबर खुदा त'आला से इनाम हासिल नहीं कर सकते। इस पर खालिद रज़ि. ने कहा: या रसूलुल्लाह! यह मुझे ताना देते हैं तो फिर मैं भी जवाब देता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम लोग खालिद को तकलीफ़ न दिया करो।" खालिद की भी दिलदारी की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने। "यह अल्लाह त'आला की तलवारों में से एक तलवार है जो खुदा त'आला ने कुफ़्फ़ार की हलाकत के लिए खींची है। यह पेशगोई कुछ सालों बाद हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई। जब खालिद अपने लश्कर को वापस लाए तो मदीना के सहाबा रज़ि. जो साथ न गए थे उन्होंने उसके लश्कर को भगोड़े कहना शुरू किया। मतलब यह था कि तुम को वहीं लड़कर मर जाना चाहिए था, वापस नहीं आना चाहिए था, मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह भगोड़े नहीं, बार-बार लौट कर दुश्मन पर हमला करने वाले सिपाही हैं। इस तरह आप ने उन आइंदा जंगों की पेशगोई फ़रमाई जो मुसलमानों को शाम के साथ पेश आने वाली थीं।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 सफ़ा 334 ता 336) और फिर खालिद बिन वलीद ने अपने जौहर भी दिखाए।

झंडे के अदब व एहतेराम का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.

ने एक मौक़े पर फ़रमाया कि: "क़ौमों में झंडे का बड़ा अदब और एहतेराम किया जाता है। कभी-कभी दुश्मन से उसका झंडा छीनने के लिए बड़ी-बड़ी कुर्बानियां की जाती हैं और कभी-कभी अपना झंडा बचाने के लिए बड़ी-बड़ी कुर्बानियां की जाती हैं और यह शिर्क नहीं होता बल्कि जैसे बाप के सामने उसके बेटे का ऊपर बैठना सब लोग नाजाएज़ समझते हैं, इसलिए कि इस तरह तमसीली ज़बान में बाप की हतक होती है। इसी तरह तमसीली ज़बान में चूंकि क़ौम का झंडा छीने जाने के मायने उसकी इज़्ज़त व आबरू के ख़ाक में मिल जाने के हैं, इसलिए क़ौमें अपनी जानें कुर्बान कर देती हैं मगर यह बर्दाश्त नहीं कर सकतीं कि उनका झंडा दुश्मन के क़ब्ज़े में चला जाए।" इसलिए लवाए अहमदियत, ख़ुद्दामुल अहमदिया वगैरह ने भी अपने झंडों की हिफ़ाज़त के लिए क़ायदा बनाया है कि हिफ़ाज़त के लिए ख़ुद्दाम मुक़र्रर हों। बहरहाल आप लिखते हैं कि: "...जब किसी क़ौम के अफ़राद के दिलों में उसके झंडे की अज़मत क़ायम कर दी जाती है तो वह उन्हें इस बात के लिए तैयार कर देती है कि अगर अपने झंडे की हिफ़ाज़त के लिए उन्हें अपनी जानें भी कुर्बान करनी पड़ें तो बिला दरैगे जानें कुर्बान कर दें क्योंकि उस वक़्त थोड़ी सी लकड़ी और कपड़े का सवाल नहीं होता बल्कि क़ौम की इज़्ज़त का सवाल होता है जो तमसीली ज़बान में एक झंडे की सूरत में उनके सामने मौजूद होता है।" आप रज़ि. ने लिखा है कि: "मैंने कई बार पहले भी बयान किया है कि हमें सहाबा रज़ि. में भी इस क़िस्म की मिसाल नज़र आती है। एक जंग में एक मुसलमान अफ़सर के पास इस्लामी झंडा था, वे लोग शानदार झंडे नहीं बनाया करते थे बल्कि एक मामूली सी लकड़ी पर काला कपड़ा बांध लेते थे मगर चाहे वह काला कपड़ा होता, चाहे उस झंडे की मामूली लकड़ी होती, उस वक़्त सवाल क़ौम की इज़्ज़त का हुआ करता था। यह नहीं देखा जाता था कि झंडा क़ीमती है या मामूली बल्कि वहां सिर्फ़ इस बात को मल्हूज़ रखा जाता था कि क़ौम की इज़्ज़त इस बात में है कि इस झंडे की हिफ़ाज़त की जाए। बहरहाल इस लड़ाई में ईसाइयों ने जिनके ख़िलाफ़ जंग हो रही थी ख़ास तौर पर उस जगह हमला किया जहां मुसलमानों का झंडा था। हज़रत जाफ़र रज़ि. के पास यह झंडा था और यह जंग जंग-ए-मौता थी। उन्होंने जब हमला किया तो हज़रत जाफ़र रज़ि. का एक हाथ कट गया, उन्होंने झट इस झंडे को दूसरे हाथ में पकड़ लिया। जब दुश्मन ने देखा कि झंडा फिर भी नीचा नहीं हुआ तो उसने दोबारा हमला किया। नतीजा यह हुआ कि उनका वह दूसरा हाथ भी कट गया जिसमें उन्होंने झंडा थामा हुआ था। उन्होंने फ़ौरन झंडे को दोनों लातों से पकड़ लिया।" यह भी रिवायत में आता है। "चूंकि लातों से ज़्यादा देर तक झंडा पकड़ा नहीं जा सकता था इसलिए उन्होंने ज़ोर से आवाज़ दी कि कोई मुसलमान आगे आए और इस झंडे को पकड़े और उन्होंने कहा: मुसलमानों! देखना इस्लाम का झंडा नीचा न हो। अब था वह कपड़े का या मामूली लकड़ी का झंडा मगर उसका नाम उन्होंने इस्लाम का झंडा रखा कि गो है तो वह लकड़ी का, है तो वह मामूली से कपड़े का मगर बहरहाल इस्लाम का झंडा है इसलिए इसकी हिफ़ाज़त ज़रूरी है। चुनांचे एक और अफ़सर ने आगे बढ़कर इस झंडे को पकड़ लिया। मेरा ख़्याल है" अपना ख़्याल ज़ाहिर कर रहे हैं "कि ग़ालिबन वह हज़रत खालिद बिन वलीद थे।" खालिद बिन वलीद नहीं थे, एक दूसरे सहाबी ने पकड़ा था जैसा कि बयान हुआ है और फिर वह खालिद बिन वलीद को दिया गया था।

तो देखो एक कपड़े की चीज़ है, मामूली लकड़ी की चीज़ है और इस्लाम के नज़दीक इस कपड़े या लकड़ी को कोई खास अहमियत हासिल नहीं, मगर जिस हद तक कौमी एज़ाज़ का सवाल है, इस्लाम इससे मना नहीं करता। खालिद बिन वलीद ने जिन्होंने वह झंडा पकड़ा कहा कि यह इस्लाम का झंडा है। देखना यह गिरने न पाए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उनकी इस बात को नापसंद नहीं किया बल्कि कभी-कभी खुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी चीज़ों की अज़मत क़ायम करने के लिए फ़रमा दिया करते थे कि यह झंडा कौन शख़्स लेगा। चुनांचे कुछ लड़ाइयों में आप ने फ़रमाया कि मैं झंडा उस शख़्स के हाथ में दूँगा जो उसकी इज़्ज़त को क़ायम करेगा और सहाबा रज़ि. एक-दूसरे से बढ़-बढ़कर इस झंडे को हासिल करने की कोशिश करते थे।"

(ख़ुत्बा जुमुआ फ़रमूदा 23 अक्तूबर 1942, खुतबात-ए-महमूद जिल्द 23 सफ़ा 471 ता 473)

बहरहाल यह बयान अभी जारी रहेगा।

मैं कहता रहता हूँ कि दुनिया के सामान्य हालात के लिए दुआएँ जारी रखें, खास तौर पर आजकल पाकिस्तान और हिंदुस्तान के जो हालात हैं उसके लिए दुआ करें। अल्लाह त'आला ज़ुल्म का ख़ात्मा करे, मज़लूमों की हिफ़ाज़त फ़रमाए। हुकूमतों को अक्ल दे कि जंगों की तरफ़ बढ़ने की बजाय सुलह और सफ़ाई से मामले तय करें। अंतर्राष्ट्रीय समझौतों की पासदारी करने वाले हों और अल्लाह त'आला अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को भी जहाँ आजकल इंसाफ़ तो मुश्किल से मिलता है, लेकिन अल्लाह त'आला उन संगठनों को भी तौफ़ीक़ दे और दोनों तरफ़ के हमदर्दों और दोस्तों को भी तौफ़ीक़ दे कि इन मुल्कों के आपस में मामले हल कर वा सकें।

पाकिस्तान की तरफ़ से तो बहरहाल यह कहा जा रहा है और अक्सर उनके मंत्रियों के बयान आते रहते हैं कि कश्मीर में दहशतगर्दी का जो वाक़या हुआ है उससे हमारा कोई ताल्लुक नहीं है और अगर तुम्हें शक है तो यूएन (संयुक्त राष्ट्र) के इदारों के ज़रिए से इसकी तहक़ीक़ करवाओ जो होनी चाहिए बजाय इसके कि हम लड़ें। हिंदुस्तान की हुकूमत को भी इस पर सकारात्मक रवैया दिखाना चाहिए। अल्लाह त'आला दोनों तरफ़ को अक्ल दे। जंग होती है तो दोनों तरफ़ नुक़सान होता है और फिर सिर्फ़ सिपाही नहीं बल्कि आम और मज़लूम भी बिलावजह मारे जाते हैं। यही हम आजकल की जंगों में देख रहे हैं। हर जगह यही हो रहा है, बहरहाल दुनिया के सब मज़लूमों के लिए दुआ करें। बज़ाहिर तो दुनिया तबाही के मुहाने पे खड़ी है। अल्लाह त'आला ही उसे तबाही से बचाए और यह उसी वक़्त हो सकता है जब यह खुदा त'आला की तरफ़ झुकने वाले बन जाएँ। अल्लाह त'आला उन्हें तौफ़ीक़ दे और हमें भी दुआओं की तौफ़ीक़ दे।

अब मैं जुमुआ की नमाज़ के बाद एक शहीद का जनाज़ा पढ़ाऊँगा।

मुहम्मद आसिफ़ साहब इब्न रफ़ीक़ अहमद साहब आफ़ भलीर, ज़िला कसूर को मुआनेदीन अहमदियत ने 24 अप्रैल को फ़ायरिंग करके शहीद कर दिया था। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (हम अल्लाह के हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं)। शहादत के वक़्त मरहूम की उम्र उन्नीस साल थी। नौजवान लड़के थे।

तफ़सीलात के मुताबिक़ वाक़ये के रोज़ रात लगभग पौने ग्यारह बजे मुहम्मद आसिफ़ साहब अपने एक अहमदिया हमसाए इसनान अहमद साहब के हमराह मोटरसाइकिल पर गाँव से बाहर एक दुकान से कुछ घरेलू ज़रूरतों की चीज़ें ख़रीदने गए। गाँव के दुकानदारों ने बायकॉट कर रखा था इसलिए ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त के लिए बाहर जाना पड़ता था। घर से लगभग सौ मीटर के फ़ासले पर रास्ते में मुआनिदीन पहले से घात लगाए मौजूद थे। उन्होंने उन दोनों पर फ़ायरिंग कर दी। मुहम्मद आसिफ़ साहब के दाएँ कंधे पर कमर की तरफ़ गोली लगी जो आर-पार हो गई जबकि दूसरे ख़ादिम इसनान अहमद साहब को बाएँ टाँग में गोली लगी। हमलावर वाक़ये के बाद भी ख़ौफ़-ओ-हरास फैलाने के लिए फ़ायरिंग करते रहे। हमारे इन दोनों खुद्दाम ने बावजूद ज़ख़्मी होने के हिम्मत और हौसले से काम लिया और वहाँ से मोटरसाइकिल पर ही निकल आए और कुछ फ़ासले पर आकर गिर गए। मोटरसाइकिल अपना चलाते रहे। पुलिस मौक़े पर देर से पहुँची। इस दौरान हमलावरों की तरफ़ से फ़ायरिंग का सिलसिला जारी रहा जिसकी वजह से इन दोनों को फ़ौरी तौर पर अस्पताल न ले जाया जा सका। पुलिस के पहुँचने पर आसिफ़ साहब को अस्पताल ले जाया गया, तथापि इस दौरान खून ज़्यादा बहने की वजह से मुहम्मद आसिफ़ साहब अस्पताल पहुँचते ही शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

वाक़ये का मुक़दमा संबंधित पुलिस स्टेशन फूल नगर, ज़िला कसूर में दर्ज हुआ है। अब उनके मुक़दमे दर्ज होने के बाद हालात ऐसे ही रहते हैं। करते कुछ नहीं ये। लेकिन देखें अब क्या करते हैं। तीन अफ़राद की गिरफ़्तारी अमल में आई है जबकि इसनान अहमद साहब जिनके पाँव में गोली लगी थी वह इब्तिदाई तिब्बी इमदाद के बाद अल्लाह त'आला के फ़ज़ल से बेहतर हैं।

भलीर, ज़िला कसूर में पिछले तीन साल से गंभीर मुख़ालिफ़त का माहौल है। कई बार अहबाब-ए-जमात के ख़िलाफ़ बेबुनियाद इल्ज़ामात के तहत मुक़दमे दर्ज करवाए गए। कई बार अहमदिया अहबाब को तशद्दुद (हिंसा) का निशाना बनाया गया। अहमदिया क़ब्रिस्तान में अहमदिया मरहूमीन की क़ब्रों से कलमा तैयबा और दीगर आयात मिटाई गईं। गाँव में पूरी तरह से बायकॉट की कैफ़ियत है। दुकानों से सौदा-सलफ़ ख़रीदने की पाबंदी के अलावा गाँव के मुश्तरका वाटर

फ़िल्ट्रेशन प्लांट से पानी लेने की इजाज़त नहीं है। बच्चों को तालीमी इदाराजात में आते-जाते तंग किया जाता है। यह तो वहाँ हालात हैं।

शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत का नफ़ूज़ उनके परदादा मुकर्रम मुहम्मद दीन साहब के ज़रिए हुआ, जिन्होंने 1934 ई. में ख़िलाफ़त-ए-सानिया के बाबर्कत दौर में क़ादियान जाकर जलसा सालाना के मौक़े पर बैअत की थी। शहीद मरहूम के दादा का नाम मुहम्मद याक़ूब साहब था।

शहीद मरहूम अपने माता पिता के इकलौते बेटे थे। कमगो और वसीअ हौसले के मालिक थे। हर किसी से मुहब्बत और हमदर्दी का ताल्लुक़ था। पंजगाना नमाज़ों के पाबंद थे। जमाअती खिदमत में पेश-पेश रहते। जमाअती इंतज़ाम के तहत होने वाले वर्ज़िशी मुक़ाबलाजात में शमूलियत का बहुत शौक़ था। हाल ही में ज़िले में होने वाले मुक़ाबले में उन्होंने पहली पोज़ीशन भी हासिल की थी। शहीद मरहूम अपनी वालिदा की मुकम्मल देखभाल करते जो दिल की मरीज़ा हैं। वालिदा मोहतरमा ने बयान किया कि मरहूम निहायत इताअत-गुज़ार बच्चा था, कभी मेरी नाफ़रमानी नहीं की। रिश्तेदारों और अज़ीज़-ओ-अक़ारिब के साथ हमदर्दी और प्यार करने वाले थे।

उनकी हमशीरा ज़ाहिदा रफ़ीक़ कहती हैं कि मेरा भाई हर एक का ख़्याल रखता। बहुत प्यार करने वाला और हमदर्द भाई था। शहादत का उसको भी शौक़ था जो अल्लाह त'आला ने पूरा कर दिया। शहादत से तीन दिन क़ब्ल उन्होंने ख़्वाब देखी कि भाई को गोली लगी है। अगले रोज़ फ़ोन कर के ख़ैरियत दरयाफ़्त की। शहादत वाले दिन भी ख़ैरियत मालूम की लेकिन कहते थे मैं मसरूफ़ हूँ तो मुख़्तसर सी बात हुई। फिर कहती हैं भाई ने कहा कि रात को बात करेंगे मगर पूरी तरह बात नहीं हो सकी और वह उसी दिन शहीद हुआ और अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हो गया। फिर उनकी बहन कहती हैं कि भाई की बाबत ख़्वाब की वजह से मैं बहुत परेशान थी। दुआ के लिए मुझे ख़त भी लिख रही थीं। कहती हैं मैं आपको ख़त लिख रही थी। और जब मैं इस फ़िक़रे पे पहुँची कि मैंने ख़्वाब में देखा है गोली लगी है तो उसी वक़्त कहती हैं मुझे इत्तेला मिली कि भाई को तो शहादत का रुतबा मिल गया है।

शहादत के वक़्त शहीद मरहूम ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला कसूर की मजलिस-ए-आमला में शामिल थे। नाज़िम तहरीक-ए-जदीद थे। मक़ामी जमाअत में नाइब क़ाएद ख़ुद्दामुल अहमदिया और नाज़िम अतफ़ाल की हैसियत से भी खिदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे।

पीछे रहने वाले परिजनों में माता पिता के अलावा दो बहने यादगार छोड़ी हैं।

निसार अहमद साहब सदर जमाअत भलीर कहते हैं कि शहीद मरहूम आला ख़ूबियों के मालिक, बड़े ख़ुश अख़्लाक़ शख़्सियत के मालिक इंसान थे। ख़ाकसार ने उनको बाकिरदार, ख़ामोश तबअ, ख़िलाफ़त से मुहब्बत और इताअत करने वाला ख़ादिम सिलसिला पाया। नमाज़ों और चंदों में बाक़ायदा, वक़ार-ए-अमल, ख़िदमत-ए-ख़ल्क़, हिफ़ाज़ती ड्यूटी गोया हर शोबा में मिसाली काम करने वाले और जमाअती कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। माता पिता की खिदमत करने वाला और उनका हर तरह ख़्याल रखने वाला था।

तारिक़ अहमद साहब मुअल्लिम हैं कहते हैं कि शहीद मरहूम आला ख़ूबियों के मालिक थे। उनके घर टेलीविज़न नहीं था मगर मेरा ख़ुत्बा जो जुमुआ का है वह बड़ी बाक़ायदगी से अपने फ़ोन पे सुना करते थे या फिर मेरे पास मिशन हाउस में, मेरे घर में ख़ुत्बा सुनने के लिए आ जाते थे। और कहते हैं जब भी किसी जमाअती काम के लिए बुलाया जाता तो फ़ौरन हाज़िर हो जाते। हर काम बड़ी ज़िम्मेदारी से करने वाले थे। जमाअती मेहमानों की बड़े शौक़ से खिदमत करते थे।

अल्लाह त'आला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दरजात बुलंद करे। परिजनों को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। पाकिस्तान में इन दहशतगर्दी करने वालों और जमाअत की मुख़ालिफ़त करने वालों की जो जुर्रत है वह बढ़ती चली जा रही है। अल्लाह त'आला जल्द उनकी पकड़ के सामान फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

का मुख्य उद्देश्य यह है कि मैं खुदा तआला की सृष्टि का आत्मिक सुधार करूँ।"

अतः अधिकाधिक खुदा तआला का स्मरण करते रहें। अधिवेशन की कार्यवाही के दौरान भी, मध्यवर्ती विराम में भी, और रात्रि के समय भी । तथा प्रार्थना करते रहें। एक सशक्त संकल्प लें।

"हे खुदा! हम इस अधिवेशन में पूर्ण निष्ठा के साथ सम्मिलित हो रहे हैं, जिसका आरंभ केवल तेरी इच्छा एवं समर्थन से हुआ। हम केवल तेरी प्रसन्नता प्राप्त करने, तेरा स्मरण बढ़ाने और तेरे प्रेम को पाने की भावना से यहाँ उपस्थित हैं। हमें उन समस्त वरदानों का अधिकारी बना जो तूने इस अधिवेशन के लिए निर्धारित किए हैं। हमारे भीतर वह पवित्र परिवर्तन उत्पन्न कर, जिसकी तू अपेक्षा करता है और जिसके लिए तूने अपने सच्चे सेवक, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस संसार में भेजा, ताकि हम सच्ची निष्ठा से उनके अनुयायियों में सम्मिलित हो सकें।"

अधिवेशन के उपरांत आप पुनः अपने दैनिक व्यवसायों में व्यस्त हो जाएँगे, किंतु इस अधिवेशन में भाग लेने का वास्तविक लाभ तभी प्राप्त होगा जब आप धार्मिक कर्तव्यों को सांसारिक आवश्यकताओं पर प्राथमिकता देंगे।

धर्म को सदैव वरीयता दें और सदा यह स्मरण रखें कि प्रत्येक अहमदी के साथ अहमदियत, हज़रत मसीह मौऊद और सम्पूर्ण इस्लाम की प्रतिष्ठा सम्बद्ध है।

ईश्वर आपको हज़रत मसीह मौऊद की शिक्षाओं का पालन करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आपका यह अधिवेशन सफल हो और आप इसकी कार्यवाही से पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें। खुदा तआला आपको इस शपथ के अनुरूप आचरण करने वाला बनाए जिसमें आपने सच्चाई को अपनाया है। वह आपको सदा खलीफ़ा के नेतृत्व के प्रति वफादार बनाए रखे। वह आपको अपने जीवनों में सच्चे और गहरे परिवर्तन लाने की सामर्थ्य प्रदान करे और आप भलाई तथा धार्मिकता में अग्रसर होते हुए संपूर्ण मानवता और इस्लाम के सहायक बन सकें।

ईश्वर की विशेष कृपा आप सबके साथ बनी रहे। आमीन।

विनीत

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

(सौजन्य: अख़बार अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 11 अक्टूबर 2020)

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान 26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्ज़ेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा
सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

अमेरिका के दूरदराज़ इलाकों से आने वाले जमाअत के अज़ीज़ अहबाब ने अपने प्यारे इमाम से मुलाक़ात के बाद अपने जज़्बाती तास्सुरात पेश किए।

हज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर नज़र पड़ते ही इंसान को एक सुकून और सरूर महसूस होता है। मुबारक चेहरा मैंने देखा तो उसमें सिर्फ़ और सिर्फ़ नूर ही नूर दिखाई दिया।

मैं नया अहमदी हूँ और पहली बार हज़ूर से मिला हूँ। इस वक़्त मेरा दिल इस क़दर जज़्बात से भरा हुआ है कि आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते। पहले मैं शिया बन गया था लेकिन वहाँ मुझे कोई सुकून नहीं मिला और दिल मुतमइन नहीं हुआ। फिर अहमदियों के बीच आना-जाना शुरू किया और दिल को इत्मीनान मिला। आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात करके मैं खुले तौर पर इस बात का इज़हार करता हूँ कि यही सही रास्ता है और यही हक़ है।

मैंने मलेशिया में जो मुश्किल और सख़्त हालात में पाँच साल गुज़ारे हैं, उन्हें वर्णन करना मेरे लिए मुमकिन नहीं, लेकिन आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात ने वो सारी तकलीफ़ें और मुश्किलात दूर कर दी हैं और मुझे दिली सुकून मिला है। आज मैं बेहद ख़ुश हूँ।

ख़ुत्बा जुमा, नेशनल मज्लिस-ए-आमिला ख़ुद्दामुल् अहमदिया और नेशनल मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह अमेरिका की हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छह बजकर पंद्रह मिनट पर "मस्जिद बैतुर्रहमान" में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहूल्लाहु तआला अपने निवास स्थान पर वापस तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तर की डाक का मुआइना फ़रमाया और विभिन्न दफ़्तरी मामलों की अदायगी में मशग़ूल रहे। आज जुमा मुबारक का दिन था। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इमामत में नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के लिए मेरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अमेरिका भर की जमाअतों से अज़हाब और उनके परिवार बहुत लंबे और कठिन सफ़र तय करके पहुंचे थे।

मायामी से आने वाले अज़हाब ने 1078 मील, टुल्सा से आने वाले 1220 मील, डैलस से आने वाले 1342 मील जबकि ह्यूस्टन से आने वाले अज़हाब ने 1422 मील का सफ़र तय किया था। टक्सन की जमाअत से आने वाले अज़हाब 2280 मील और लॉस एंजेलिस से आने वाले अज़हाब और उनके परिवार 2653 मील, सिएटल से आने वाले 2731 मील, जबकि सैक्रामेंटो से आने वाले 2751 मील और सैन होजे से आने वाले 2843 मील के लंबे और कठिन सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा की इमामत में नमाज़-ए-जुमा अदा करने पहुंचे थे।

इसके अलावा पड़ोसी मुल्कों मेक्सिको और पुएर्टो रिको से आने वाले अज़हाब ने भी अपने आक़ा की इमामत में नमाज़-ए-जुमा अदा करने की सौभाग्य प्राप्त किया। कनाडा से भी एक बड़ी तादाद में नमाज़-ए-जुमा के लिए मस्जिद बैतुर्रहमान पहुंची थी।

नमाज़-ए-जुमा में हजारों लोगों ने शिरकत की।

ख़ुतबा-ए-जुमा

तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार एक बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए और ख़ुतबा-ए-जुमा इरशाद फ़रमाया। (हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस ख़ुतबा-ए-जुमा का पूरा पाठ देखने के लिए देखें: अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, अंक: 04 नवंबर 2022)

मस्जिद बैतुर्रहमान, मेरीलैंड में ख़ुतबा-ए-जुमा के दृश्य

हुज़ूर-ए-अनवर का यह ख़ुतबा-ए-जुमा MTA इंटरनेशनल के माध्यम से दुनिया भर में लाइव प्रसारित किया गया। यह ख़ुतबा दो बजे तक जारी रहा। बाद में हुज़ूर-ए-अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र को मिलाकर अदा कराया।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

नेशनल आमिला ख़ुद्दामुल अहमदिया अमेरिका की मुलाकात

तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार शाम छह बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए, जहां नेशनल मजलिस-ए-आमिला ख़ुद्दामुल अहमदिया अमेरिका की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। (विस्तृत रिपोर्ट यहां देखें) यह मीटिंग छह बजकर 55 मिनट पर समाप्त हुई।

नेशनल आमिला अंसारुल्लाह अमेरिका की मुलाकात

इसके बाद सात बजे नेशनल मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह अमेरिका की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ के साथ इस मीटिंग का आग़ाज़ फ़रमाया। (विस्तृत रिपोर्ट यहां देखें) मीटिंग के अंत में मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह के सदस्यों को हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मीटिंग रात आठ बजे समाप्त हुई।

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए। रात साढ़े आठ बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुर्रहमान में नमाज़-ए-मग़रिब व ईशा अदा कराई। नमाज़ों के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहूल्लाहु तआला अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

अमेरिका के दौरे का बीसवाँ दिन

15 अक्टूबर 2022, शनिवार

परिवारों से मुलाक़ातें, निकाहों की घोषणाएँ, हज़ूर अनवर के साथ जमाअत ए अहमदिया अमेरिका के मुबल्लीग़ीन की मीटिंग, नॅशनल मजलिस आमिला जमाअत अहमदिया अमेरिका की हज़ूर अनवर के साथ मीटिंग, ह्यूमैनिटी फर्स्ट की इंतेज़ामी कमेटी की हज़ूर अनवर के साथ मीटिंग।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर "मस्जिद बैतुर्रहमान" में तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र अदा करवाई। नमाज़ के बाद हज़ूर अनवर अपनी रहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हज़ूर अनवर ने दुनिया के मुख़्तलिफ़ ममालिक से फैक्स और ईमेल के ज़रिए आने वाले ख़ुतूत और रिपोर्ट्स का जायज़ा लिया और हिदायतें अता कीं। इसके अलावा मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी कामों में मसरूफ़ियत रही।

परिवारों से मुलाक़ातें

प्रोग्राम के मुताबिक़ सुबह 11 बजे हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर में तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सेशन में 37 परिवारों के 162 अफ़राद को अपने प्यारे आका से मुलाक़ात का सौभाग्य मिला। हज़ूर अनवर ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट अता की।

आज मुलाक़ात करने वाले ये परिवार मेरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अमेरिका की मुख़्तलिफ़ 25 जमाअतों से आए थे, जिनमें से कई ने बहुत लंबा सफ़र तय किया था। जमाअत Albany से आने वालों ने 353 मील, Charlotte से 422 मील और Boston से आने वालों ने 427 मील का सफ़र तय किया।

जमाअत अहमदिया के सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ

आज मुलाक़ात करने वालों में कई ऐसे लोग और परिवार थे जिनकी यह पहली बार हज़ूर से मुलाक़ात थी।

एक दोस्त, सहराब अहमद साहिब ने बताया: "मेरी ज़िंदगी की यह पहली मुलाक़ात थी। मेरा दिल सुकून और मोहब्बत से भर गया है। ये चंद लम्हे जो मैंने ख़लीफ़तुल मसीह के साथ बिताए, मेरे लिए नायाब यादें बन गए हैं। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।"

शमीर गोहर मलिक साहिब, जो सेंट्रल जर्सी से आए थे, बोले: "बचपन में मैंने हज़ूर को देखा था जब मैं बहुत छोटा था। आज एक बालिग़ की हैसियत से पहली बार मिल रहा हूँ। इस वक़्त मेरे जज़्बात ऐसे हैं कि मैं एक अजीब सुकून और लज़्ज़त महसूस कर रहा हूँ। यह मुलाक़ात एक अज़ीम ने'मत है। हर किसी को हज़ूर से मिलने का मौक़ा नहीं मिलता। हम बहुत ख़ुशनसीब हैं।"

अली उमर साहिब, जो क्लीवलैंड से आए थे, बोले: "मेरे जज़्बात बयान से बाहर हैं। हम बहुत ही ख़ुशनसीब हैं। हज़ूर ने हमें बहुत मोहब्बत दी। हमें और हमारे बच्चों को तौफ़े अता किए।"

शाहीन ख़ान साहिब जमाअत Queens से आए थे। उनकी अहलिया बात करते हुए रो पड़ीं। बोलीं: "हमारी ख़ुशी बयान से बाहर है। हम बारह–तेरह साल जुदा रहे। शौहर अमेरिका आ गए और वहाँ पनाह की दरख़्वास्त दी। जब केस पास हुआ तो हम भी आए और आज हमारी पूरी फ़ैमिली को हज़ूर से मुलाक़ात का मौक़ा मिल गया। हमारे दिल ख़ुशी से भर गए हैं और हम कुछ कह नहीं पा रहे हैं।"

मुलाक़ातों का प्रोग्राम दोपहर 1 बजे तक जारी रहा।

जमाअत अमेरिका के मुबल्लीग़ीन की मुलाक़ात

इसके बाद, तय कार्यक्रम के अनुसार हज़ूर अनवर मीटिंग हॉल में तशरीफ़ लाए जहाँ जमाअत अमेरिका के मुबल्लीग़ीन की हज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। (तफ़्सीली रिपोर्ट यहाँ देखें)। यह मीटिंग दोपहर 2 बजे तक जारी रही।

फिर 2 बजकर 20 मिनट पर हज़ूर अनवर ने मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ोहर व अस्र एक साथ अदा करवाई।

निकाहों की घोषणाएँ

नमाज़ों के बाद हज़ूर अनवर ने निम्नलिखित 14 निकाहों की घोषणा फ़रमाई:

1. अज़ीज़ा आइशा सलाहुद्दीन बिन्ते श्रीमान सलाहुद्दीन नासिर साहिब का निकाह अज़ीज़म उसामा ख़लील सोलंगी इब्ने श्रीमान ख़लील अहमद सोलंगी साहिब (शहीद) से।

2. अज़ीज़ा बासिरा बशीर बिन्ते श्रीमान बशीर अहमद चौधरी साहिब का निकाह अज़ीज़म अहमद तारिक इब्ने श्रीमान चौधरी महमूद अहमद साहिब से।

3. अज़ीज़ा फ़िज़ा रमज़ान बिन्ते श्रीमान मुहम्मद रमज़ान साहिब (मरहूम) का निकाह अज़ीज़म नासिर अहसन इब्ने श्रीमान मियाँ मनव्वर अहमद साहिब से।

4. अज़ीज़ा इफ़्त जहाँ बिन्ते श्रीमान डॉक्टर सैयद तनवीर अहमद साहिब का निकाह अज़ीज़म शहज़ाद सफदर अली इब्ने श्रीमान सफदर अली साहिब से।

5. अज़ीज़ा माइरा अहमद बिन्ते श्रीमान डॉक्टर मुहम्मद अहमद अशरफ़ साहिब का निकाह अज़ीज़म मिर्ज़ा माजिदुल अहमद इब्ने श्रीमान मिर्ज़ा नसीर अहमद साहिब से।

6. अज़ीज़ा सबीहा अनम बिन्ते श्रीमान अहमद मुहम्मद ख़ान साहिब का निकाह अज़ीज़म ग़ज़ाली वासे इब्ने श्रीमान अब्दुल वासे साहिब से।

7. अज़ीज़ा सोफ़िया सईद बिन्ते श्रीमान असद सईद साहिब का निकाह अज़ीज़म मुईज़ अहमद आराईं इब्ने श्रीमान वसीम अहमद आराईं साहिब से।

8. अज़ीज़ा सुलताना नासिरा बिन्ते श्रीमान सैयद अहमद ख़ुंदकर साहिब का निकाह अज़ीज़म अबू मूसा तारिक इब्ने श्रीमान मुहम्मद अबुल हुसैन ख़ान साहिब से।

9. अज़ीज़ा वजिहा अहमद बिन्ते श्रीमान दाऊद अहमद साहिब का निकाह अज़ीज़म सैयद अदनान अहमद इब्ने श्रीमान सैयद आतिफ़ नदीम साहिब से।

10. अज़ीज़ा ज़ारा सलमान मिर्ज़ा बिन्ते श्रीमान अनीस अहमद मिर्ज़ा साहिब का निकाह अज़ीज़म मुहम्मद ख़ालिद रज़ाक इब्ने श्रीमान मियाँ ज़फ़र अहमद रज़ाक साहिब से।

11. अज़ीज़ा नाइला अंबरिन साकिब बिन्ते श्रीमान मनव्वर अहमद साकिब साहिब का निकाह अज़ीज़म ताहर महमूद इब्ने श्रीमान मुजाहिद महमूद साहिब से।

12. अज़ीज़ा अमीरा मुबारक बिन्ते श्रीमान मुबारक अहमद नसीम साहिब का निकाह अज़ीज़म दानियाल महमूद (तलिबे इल्म, जामिया अहमदिया कनाडा) इब्ने श्रीमान मुहम्मद महमूद साहिब से।

13. अज़ीज़ा आमना रियाज़ बिन्ते श्रीमान रियाज़ अहमद बसरा साहिब (शहीद, घटियालियाँ) का निकाह अज़ीज़म मुहम्मद वक़ास अहमद बसरा इब्ने श्रीमान नवीद अहमद बसरा साहिब से।

14. अज़ीज़ा मीराल फ़ातिमा बिन्ते श्रीमान मुहम्मद मुबश्शिरुल्लाह चौधरी साहिब का निकाह अज़ीज़म उमर फ़ारूक़ इब्ने श्रीमान सईद फ़ारूक़ चौहान साहिब से।

आख़िर में हज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और फिर अपनी रहाइशगाह तशरीफ़ ले गए।

नॅशनल आमिला जमाअत अहमदिया अमेरिका की मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार शाम 6 बजे हज़ूर अनवर मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए और नॅशनल मजलिस आमिला जमाअत अहमदिया अमेरिका के साथ मीटिंग शुरू हुई। (तफ़्सीली रिपोर्ट यहाँ देखें)। यह मीटिंग शाम 7:30 बजे तक जारी रही। मीटिंग के अंत में सभी आमिला के मेंबर्स को हज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य मिला।

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट यूएसए की इंतेज़ामी कमेटी की मुलाक़ात

इसके बाद हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर में तशरीफ़ ले गए जहाँ ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट यूएसए की इंतेज़ामी कमेटी की हज़ूर अनवर से मीटिंग हुई। (तफ़्सीली रिपोर्ट यहाँ देखें)। मीटिंग के आख़िर में मेंबर्स को हज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फोटो खिंचवाने की सआदत हासिल हुई।

इसके बाद हज़ूर अनवर ने मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाकर नमाज़े मग़रिब व ईशा जमा करके अदा करवाईं। नमाज़ों के बाद हज़ूर अनवर अपनी रहाइशगाह तशरीफ़ ले गए।

★ ★ ★

क्या ईद-उल-अज़्हा के मौके पर मृतकों के नाम पर जानवर की कुर्बानी दी जा सकती है?
क्या हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) सगे भाई थे? और जब फिरऔन बनी इस्राईल के सभी लड़कों को कत्ल करवा देता था, तो हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) कैसे ज़िंदा बचे?
मुराक़बा और इसके बारे में हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) की शिक्षाएँ और तरीका इस संबंध में मार्गदर्शन।
अगर हवा निकलने से वुज़ू टूट जाए, तो क्या नमाज़ के लिए फिर से वुज़ू करने से पहले इस्तिंजा करना ज़रूरी होता है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-38)

प्रश्न: इंडोनेशिया से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि क्या ईद-उल-अज़्हा के मौके पर मृतकों के नाम पर जानवर की कुर्बानी दी जा सकती है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 08 जून 2021 को इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया:

उत्तर: मृतकों की ओर से कुर्बानी करने में कोई हर्ज नहीं है, बल्कि यह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। अतः हदीसों में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ईद-उल-अज़्हा के मौके पर एक कुर्बानी अपनी और अपने परिवार की ओर से किया करते थे और एक कुर्बानी अपनी उम्मत की ओर से किया करते थे। और आपकी उम्मत में ऐसे बहुत से सहाबी भी थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवनकाल में शहीद हो चुके थे और वे भी आपकी ओर से की गई उस कुर्बानी में शामिल होते थे।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल-अदाही; मुस्नद अहमद बिन हंबल, मुस्नदुल-अंसार मिन मुस्नदिल-कबाइल, हदीस नंबर 25937)

इसके अतिरिक्त हदीस में यह भी वर्णित है कि एक व्यक्ति ने हज़रत अली (रज़ि.) को दो जानवरों की कुर्बानी करते हुए देखा तो इसका कारण पूछा। इस पर हज़रत अली (रज़ि.) ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे वसीयत की थी कि मैं उनकी ओर से कुर्बानी किया करूँ। इसलिए मैं एक जानवर आपकी ओर से कुर्बान करता हूँ।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-अदाहि, बाबुल-अज़्हिया अ़निल-मय्यित)

हज़रत मसीह मौउद के दूसरे खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (रज़ि.) ने हज़रत खलीफ़तुल-मसीह अव्वल (रज़ि.) के प्रति अपने दिल में जो स्थान और मोहब्बत थी, उसका ज़िक्र करते हुए एक बार कहा: ''हज़रत खलीफ़तुल-मसीह अव्वल की वफ़ात को 42 साल हो चुके हैं, लेकिन मैं हर कुर्बानी के मौके पर आपकी ओर से कुर्बानी करता हूँ... फिर जब मैं हज पर गया तो उस समय भी आपकी ओर से कुर्बानी की थी और अब तक हर ईद के मौके पर आपकी ओर से कुर्बानी करता चला आया हूँ।''

(अनवारुल-उलूम, जिल्द 25, पृष्ठ 468)

इसलिए मृत प्रियजनों और संबंधियों की ओर से ईद-उल-अज़्हा के मौके पर कुर्बानी करना ऐन सुन्नत-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।

प्रश्न: एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखकर पूछा कि क्या हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) सगे भाई थे? और जब फिरऔन बनी इस्राईल के सारे लड़कों को कत्ल करवा देता था, तो हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) कैसे ज़िंदा बच गए? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 13 जून 2021 को इस प्रश्न का निम्न उत्तर दिया:

उत्तर: बाइबिल के अनुसार हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) सगे भाई थे। वहाँ लिखा है: ''और अमराम ने अपने पिता की बहन यूक़बद से विवाह किया जिससे उसके बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। और अमराम 137 वर्ष तक जीवित रहा... और यही हारून और मूसा हैं जिन्हें ख़ुदावंद ने हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल को उनके दलों के अनुसार मिस्र से निकाल ले जाओ। यही वे हैं जिन्होंने बनी इस्राईल को मिस्र से निकालने के लिए फिरऔन से बात की थी।''

(खरूज, अध्याय 6, आयत 20 और 27,26)

बाइबिल के अनुसार हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से बड़े थे। वहाँ लिखा है कि ''मूसा 80 वर्ष का और हारून 83 वर्ष का था जब वे फिरऔन से बातचीत करने गए।''

(खरूज, अध्याय 7, आयत 7)

फिरऔन ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म के समय अपने स्वप्न के कारण ज्योतिषियों और भविष्यवक्ताओं के परामर्श से इब्रानियों के बच्चों के कत्ल का आदेश दिया था। चूंकि हज़रत हारून पहले ही जन्म ले चुके थे, इसलिए वे जीवित बच गए।

हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) के जीवित बचने का एक और कारण बाइबिल में यह लिखा गया है कि हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का ज़माना गुज़र जाने के बहुत समय बाद जब बनी इस्राईल की संख्या इतनी बढ़ गई कि देश उनसे भर गया, तो उस समय के राजा ने डर के मारे उनके ऊपर तरह-तरह की सख्तियाँ शुरू कर दीं। लेकिन जितना उन्हें सताया गया, उतनी ही उनकी संख्या में बढ़ोत्तरी होती गई। अतः मिस्र के राजा ने दाइयों को हुक्म दिया कि अगर इस्राईली औरत के यहाँ लड़का पैदा हो तो उसे मार देना और अगर लड़की हो तो उसे जीवित रहने देना। लेकिन दाइयों ने राजा के आदेश का पालन नहीं किया।

(उद्धृत: खरूज, अध्याय 1, आयत 7 से 17)

इसके अतिरिक्त तफ़सीरों (कुरआन की व्याख्याओं) में भी लिखा है कि मिस्री लोग बनी इस्राईल से बेगार का काम करवाते थे, इसलिए एक साल बच्चों को ज़िंदा रखते थे और एक साल कत्ल करवा देते थे, ताकि उनकी संख्या न बढ़े लेकिन मज़दूरी के लिए मज़दूर मिलते रहें। हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) का जन्म उस वर्ष हुआ था जिसमें बनी इस्राईल के बच्चों को जीवित रखा गया था।

(मआलिमुत-तंजील (तफ़्सीर अल-बग़वी), लेखक अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसऊद, सूरह अल-बक़रा, आयत 50 के अंतर्गत)

इस प्रकार हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) के जीवित रहने की विभिन्न वजहें बाइबिल और तफ़सीरों में बयान की गई हैं।

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुराक़बा और इस विषय में हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) की शिक्षाओं और तरीक़े के बारे में पूछा। हज़ूर अनवर ने अपने मकतूब दिनांक 13 जून 2021 में इस विषय में निम्नलिखित निर्देश दिए। हज़ूर अनवर ने फरमाया:

उत्तर: मुराक़बा का सामान्य अर्थ ध्यान लगाना, एकाग्रता और अपने कार्यों पर चिंतन करना होता है। यह आदत केवल इंसानों में ही नहीं, बल्कि जानवरों में भी पाई जाती है। अतः हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) हज़रत जुनेद रहमतुल्लाह अलैह के बारे में फरमाते हैं कि वे फर...

उत्तर : ध्यान (मुराक़बा) का अर्थ सामान्यतः एकाग्रता, संकल्प और अपने कर्मों पर विचार करना होता है। यह आदत केवल इंसानों में ही नहीं, बल्कि जानवरों में भी पाई जाती है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैह के बारे में फरमाते हैं कि वह कहा करते थे, "मैंने ध्यान बिल्लियों से सीखा है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 147, मुद्रित 2016)

मुराक़बे की प्रक्रिया जहाँ मुस्लिम औलिया और सूफियों का एक विशेष अभ्यास रही है, वहीं इस्लाम के अलावा अन्य धर्मों में भी अपने-अपने ढंग से

इसका उल्लेख मिलता है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु यहूदियों के "एसीन" (Essene) फ़िर्क़े जिन्हें फ़रीसी भी कहा जाता था के बारे में "एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका" के हवाले से लिखते हैं कि ये लोग रोज़े रखते थे और बहुत पवित्र जीवन जीते थे। वे ग़ैब की बातें बताते थे और... इबादत के समय ध्यान लगाते थे ताकि उनकी आत्मा का संबंध स्वर्गीय पिता से जुड़ जाए।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 4, पृष्ठ 384, कॉलम नंबर 2)

इस्लामी इबादतों का मुख्य उद्देश्य यही है कि इंसान और ख़ुदा के बीच गहरा संबंध स्थापित हो। अतः नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक सवाली के जवाब में 'एहसान' की परिभाषा करते हुए फ़रमाया: "أَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ" यानी, तुम्हें अल्लाह की इबादत इस प्रकार करनी चाहिए जैसे तुम उसे देख रहे हो, लेकिन यदि यह भावना न बन सके, तो कम से कम यह समझो कि वह तुम्हें देख रहा है।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सवाल-ए-जिबरील अन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

इबादत की ये दोनों अवस्थाएँ मुराक़बे की ही शकलें हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ की हिकमत बयान करते हुए फ़रमाते हैं: "दरअसल नमाज़ में यह बताया गया है कि इंसानी रूह के कमाल के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं दूसरों के साथ सहयोग, नसीहत व याददिहानी और ध्यान (मुराक़बा)। ध्यान की जगह वे खामोश नमाज़ें होती हैं जिनमें इंसान अपनी आवश्यकता के अनुसार एकाग्रता से दुआ करता है।"

(रोज़नामा अल-फ़ज़्ल, क़ादियान, 5 सितम्बर 1936, पृष्ठ 4)

मुराक़बे की प्रक्रिया और लाभ बताते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "हमारे देश में यह स्थिति है कि हम हर विषय पर ऐसे कूदते हैं जैसे बंदर पेड़ पर कूदता है। एक विचार आता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा, फिर चौथा हम एक जगह टिकते ही नहीं। इस वजह से कुरआनी और हदीसी शिक्षाओं की महान बातें हमारे भीतर समा नहीं पातीं, क्योंकि हम तुरंत ही आगे बढ़ जाते हैं। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसका इलाज मुराक़बे को बताया है और सूफ़ियों ने इस पर अमल के विभिन्न तरीके निकालें हैं, लेकिन इस भौतिक युग में इसकी परवाह कौन करता है?... हमारे उलमा ने वह उपाय नहीं अपनाया। और वह उपाय यह था कि कुरआन और हदीस की उन शिक्षाओं को बार-बार ज़ेहन में लाया जाए जो इन विषयों से संबंधित हैं, जिसे मुराक़बा कहते हैं, और बार-बार लोगों के सामने उन्हें पेश किया जाए। मगर हमारे यहाँ तो केवल यह कहा जाता है कि नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, यूँ सज्दा करो, यूँ ढीला इस्तेमाल करो—कम से कम सात बार पत्थर से खास हरकतें न की जाएँ तो ढीले का इस्तेमाल सही नहीं माना जाता। यानी या तो सतही बातों पर ज़ोर होता है या रस्मों पर। और जो असली मक़सद इन हुक्मों के पीछे है, उसे पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 24, पृष्ठ 515)

जमाअत के अज़ीज़ों को मुराक़बे की ताकीद करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "तुम्हें चाहिए कि हर रोज़ कुछ समय खामोशी से अल्लाह के ज़िक्र या मुराक़बे के लिए खर्च करने की आदत डालो। अल्लाह के ज़िक्र का मतलब यह है कि नमाज़ों के अलावा रोज़ाना थोड़ा समय चाहे शुरुआत में पाँच मिनट ही क्यों न हो ख़ास तौर पर तय किया जाए, जिसमें तन्हाई में खामोश बैठकर तसबीह व तहमीद की जाए। मसलन, 'सुब्हान अल्लाह', 'अल्हम्दुलिल्लाह', 'अल्लाहु अकबर' और इसी तरह अल्लाह की अन्य विशेषताओं का विर्द किया जाए और उन पर विचार किया जाए।

मुराक़बे का मतलब यह है कि इंसान रोज़ कुछ देर के लिए अकेले में बैठकर अपने नफ़्स का मुहासिबा करे कि उस से कौन-कौन सी ग़लतियाँ हो चुकी हैं। क्या वह उन्हें दूर कर सकता है या नहीं? अगर कर सकता है तो अब तक क्यों नहीं कीं? अगर नहीं कर सकता तो उसकी वजहें क्या हैं और उनका क्या इलाज हो सकता है? फिर आगे सोच सकता है कि अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों की इस्लाह की क्या सूरत हो सकती है? तब्लीग के कौन-कौन से असरदार तरीके हो सकते हैं? कौन-कौन सी रुकावटें हैं और उन्हें किस तरह दूर किया जा सकता है? इस प्रकार के आत्मविश्लेषण का जो भी परिणाम निकले, उसे डायरी में लिखा जाए और इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाए।

अगर इस प्रकार अल्लाह के ज़िक्र और मुराक़बे की आदत डाली जाए, तो यक़ीनन इससे रूहानियत में तरक़्क़ी होगी, अक़्ल तेज़ होगी और इमाम-ए-वक़्त की हिदायतों और तक़ारीर पर गहराई से ग़ौर करने और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ मिलेगी। ऐसा व्यक्ति धीरे-धीरे इस हद तक पहुँच जाएगा कि वह दुनिया के लिए एक रूहानी डॉक्टर और इस्लाह करने वाला बन जाएगा।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 23, पृष्ठ 61-62)

हुक्म व अद्ल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने अनुयायियों के लिए मुराक़बा का वास्तविक तरीका और उसके लाभ बताते हुए फ़रमाते हैं: ''तुम अपने समस्त शरीर, आत्मा और जीवन के साथ अल्लाह तआला के हो जाओ। फिर अल्लाह तआला स्वयं ही तुम सबका संरक्षक, सहायक, सहायता करने वाला और कार्य साधक बन जाएगा। चाहिए कि इंसान की समस्त शक्तियाँ आंख, कान, दिल, दिमाग, हाथ-पांव सभी अल्लाह से जुड़ जाएं। इनमें किसी प्रकार का विरोध या विभाजन न रहे। इसी में सारी सफलताएँ और विजय छुपी हुई हैं। यही असली मुराक़बा है, इसी से दिली गर्मी और रूहानियत पैदा होती है और इसी की बदौलत पूर्ण ईमान हासिल होता है।''

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 320, संस्करण 2016)

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखकर पूछा कि अगर हवा निकल जाने से वुज़ू टूट जाए तो क्या नमाज़ के लिए दोबारा वुज़ू करने से पहले इस्तिंजा करना ज़रूरी होता है?

उत्तर: हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मक्तूब दिनांक 22 जुलाई 2021 में इस विषय का निम्नलिखित उत्तर दिया:

उत्तर: हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और जहाँ आपने वुज़ू की विवरण दिया है, उनमें कहीं भी वुज़ू से पहले इस्तिंजा करने का ज़िक्र नहीं है। इसलिए केवल हवा निकलने से वुज़ू टूटने पर नमाज़ के लिए दोबारा वुज़ू करते समय इस्तिंजा करना ज़रूरी नहीं है। हां, अगर हवा के साथ गंदगी या पेशाब भी निकल आए, तो फिर वुज़ू से पहले इस्तिंजा करना ज़रूरी है, ताकि निकली हुई गंदगी को धोया जा सके। अन्यथा एक बार क़ज़ा-ए-हाजत से फारिग होकर इस्तिंजा करने के बाद जब वुज़ू कर लिया जाए, तो उसके बाद सिर्फ हवा निकलने पर वुज़ू दोहराते समय इस्तिंजा करना आवश्यक नहीं।

प्रश्न: एक मुर्ब्बी साहिब ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखकर पूछा कि कुरआन करीम की आयत *"वल-मुह्सनातु मिन निसा इल्ला मा मलकत अईमानुकुम"* में कौन-सी औरतें मुराद हैं और क्या उनके पतियों के होते हुए भी उनसे निकाह किया जा सकता है? या यह आयत किसी विशेष समय के लिए थी? और क्या अब यह आयत मंसूख़ हो गई है?

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मक्तूब दिनांक 22 जुलाई 2021 में इस बारे में निम्नलिखित उसूली हिदायतें प्रदान कीं। हज़ूर ने फ़रमाया:

उत्तर: आप एक मुर्ब्बी भी हैं और आपको यह भी नहीं पता कि क़ुरआन करीम की कोई आयत मंसूख़ नहीं हो सकती। आपके प्रश्न से तो यह प्रतीत होता है कि आपने न तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन किया है, न ही हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु की किताबों का, और न ही आप ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत के ख़ुत्बात या तक़ारीर सुनते हैं। बल्कि आपको तो जमाअत के बुनियादी अकीदे का भी इल्म नहीं, जो आप यह पूछ रहे हैं कि क्या क़ुरआन करीम की यह आयत मंसूख़ हो गई है?

क्योंकि जमाअत अहमदिया का बुनियादी अकीदा है कि क़ुरआन करीम अल्लाह तआला का ऐसा कलाम है जिसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी स्वयं अल्लाह ने ली है और बिस्मिल्लाह की "ब" से लेकर "वाल्नास" की "स" तक की पूरी इबारत अल्लाह के इज़्न से महफ़ूज़ और ग़ैर-मुतग़य्यिर है, और उसका एक नुक़्ता तक मंसूख़ नहीं हो सकता। और जिस तरह आज से 1400 साल पहले क़ुरआन करीम क़ाबिल-ए-अमल था, आज भी वैसा ही है और इंशाअल्लाह क़यामत तक क़ाबिल-ए-अमल रहेगा।

हाँ, यह बात सही है कि क़ुरआन करीम के कुछ अहकाम कुछ विशेष परिस्थितियों से संबंधित होते हैं। हज़रत रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में जब वे परिस्थितियाँ थीं, तो वे अहकाम लागू होते थे। भविष्य में अगर वैसे ही हालात फिर से पैदा होते हैं, तो वे अहकाम फिर लागू होंगे। इस

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGIST R OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUN-HIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 05 June 2025 Issue No. 23

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

आयत में जिन लौंडियों का ज़िक्र है, उनके बारे में भी यही स्थिति है।

एक मुर्ब्बी का काम सिर्फ यह नहीं है कि वह केवल प्रश्न करके अपने मसायल हल कर ले या कोई बात जानने के लिए सिर्फ गूगल सर्च का सहारा ले। बल्कि एक मुर्ब्बी को खुद तहक़ीक़ करके अपने इल्म में इज़ाफ़ा करने की आदत होनी चाहिए और उसका इल्म पुख़्ता और गहरा होना चाहिए। उसे इल्मी और जमाअती किताबों पर गहरी नज़र होनी चाहिए, उसे सोचना और गौर करके नए-नए इल्मी नुक्ते निकालने की आदत होनी चाहिए।

जहाँ तक उक्त आयत में वर्णित औरतों का संबंध है, तो इसका तआल्लुक़ इस्लाम के आरंभिक युग से है जब दुश्मन-ए-इस्लाम मुसलमानों पर तरह-तरह के जुल्म करते थे, और यदि किसी गरीब मजलूम मुसलमान की औरत उनके हाथ लग जाती थी, तो वे उसे अपनी औरतों में लौंडी बनाकर शामिल कर लेते थे। अतः *"जज़ाऊ सयीअतिन सयीअतुन मिसलुहा" (अश-शूरा: 41)* की क़ुरआनी शिक्षा के अनुसार दुश्मन की वे औरतें, जो इस्लाम पर हमला करने वाले लश्कर के साथ उनकी मदद के लिए आती थीं और उस समय के रिवाज के अनुसार जंग में लौंडी बना ली जाती थीं, अगर वे फिर फिरौती अदा करके या मुकातबत के ज़रिए आज़ादी नहीं लेती थीं, तो उस समय राज्य की कोई जेलें नहीं होती थीं, अतः उन्हें मुजाहिदीन में बाँट दिया जाता था। ये मुजाहिदीन जहाँ उनकी रिहाइश, खाना और कपड़े की आवश्यकताओं का ख्याल रखते थे, वहीं बदले में उस दौर के दस्तूर के अनुसार उन्हें उन औरतों से लाभ उठाने का पूरा हक़ होता था जिसमें जिस्मानी संबंध भी शामिल थे।

अतः इस आयत में दुश्मन की उन्हीं औरतों का ज़िक्र है कि अगर वे उपरोक्त परिस्थितियों में मुसलमानों के कब्जे में आती हैं, तो चाहे वे विवाहित हों या अविवाहित, लौंडी की हैसियत से उनसे वैवाहिक संबंध स्थापित करने की अनुमति है।

मैं यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूं कि क़ुरआन करीम, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फरामीन की रौशनी में मेरा मत है कि ऐसी औरतों से एक प्रकार के निकाह के बाद ही वैवाहिक संबंध स्थापित किए जा सकते थे। लेकिन इस निकाह के लिए उस लौंडी की रज़ामंदी ज़रूरी नहीं होती थी, और न ही इस निकाह के लिए शरई तौर पर किसी वली की रज़ामंदी आवश्यक होती थी। बल्कि जिस तरह बहुत से क़बीलों और समाजों में यह तरीका प्रचलित रहा है और आज भी कुछ देशों में यह रिवाज है कि समाज में केवल यह घोषणा कर दी जाती है कि हम पति-पत्नी हैं और यही एक प्रकार का ऐलान-ए-निकाह होता है, उसी प्रकार उपरोक्त प्रकार की लौंडी का किसी मुजाहिद के हिस्से में आना दोनों के बीच निकाह की घोषणा होती थी। ऐसी लौंडी से इस प्रकार के निकाह के परिणामस्वरूप पुरुष को चार शादी की अनुमति पर कोई असर नहीं पड़ता था, अर्थात एक पुरुष चार शादियाँ करने के बाद भी उपरोक्त प्रकार की लौंडी से संबंध बना सकता था। हां, यदि उस लौंडी से बच्चा पैदा हो जाता था, तो वह "उम्मुल्-वलद" के तौर पर आज़ाद हो जाती थी।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Trज़ियल्लाहु अन्हो ining Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerज़ियल्लाहु अन्हो tor, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़्वाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nig n Board of Badar. Name of Owner: Nig n Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad